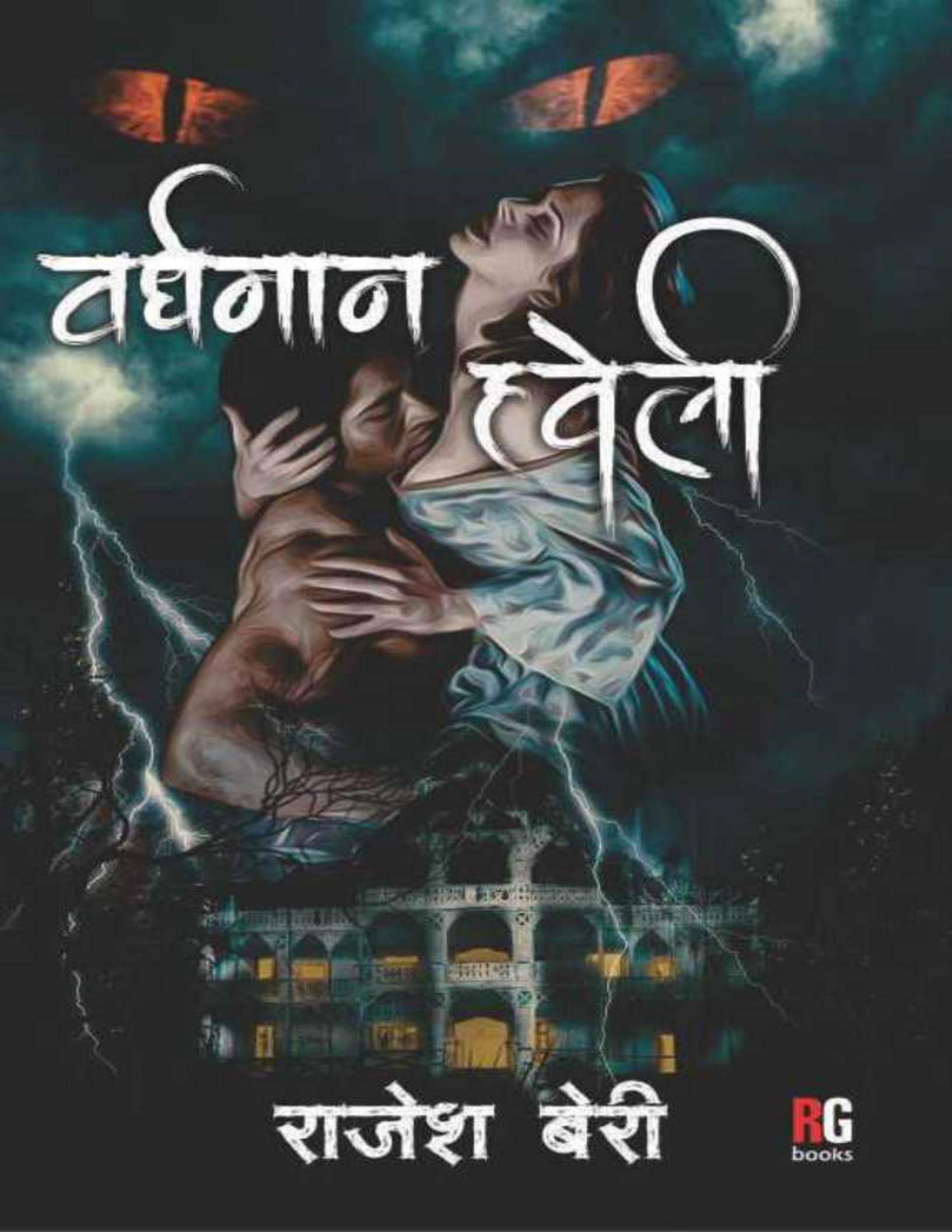

वर्धमान
हवेली
राजेश बेरी
RG
books

वर्धमान हवेली

राजेश बेरी

REDGRAB books

RG
books

Title: Vardhaman Haveli
Author: Rajesh Beri

Published By
Redgrab books Pvt. Ltd.
942, Mutthiganj, Prayagraj, 211003
www.redgrabbooks.com
contact@redgrabbooks.com

Printed and bound in Manipal Technologies Limited, Manipal, Karnataka
Paperback, Second Ed. published by Redgrab Books Pvt. Ltd. in 2022

Copyright © Rajesh Beri 2022
Printing rights reserved: Redgrab Books Pvt. Ltd., 2022
Cover design and Typeset in Redgrab Books arts

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

This book is entirely a work of fiction and has no resemblance to any person or thing, living or dead. If found any, that will be purely coincidental. I have mentioned several places in Rampur but do not claim it to be exactly the way I have described. These places may or may not exist. There are no intentions to hurt any individual or group through this story. Its sole purpose is to entertain its audience.

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, and including photocopying, recording, or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the Publisher, except where permitted by law.

प्यारे पाठकों को समर्पित

प्रस्तावना

वर्धमान हवेली के एक आलीशान बेडरूम में कमोलिका की सिसकियों की आवाज़ आ रही थी। वो रोते हुए शमा से एक ही बात कहे जा रही थी-

"शमा मेरे अभीर को बचा लो, वो मेरे अभीर को मुझसे छीनकर ले जायेगी" और शमा कमोलिका को हौसला देते हुए कह रही थी-

"नहीं कमोलिका तुम्हारे अभीर को तुमसे कोई नहीं छीन सकता, तुम्हें अपने बदन की सुंदरता की ताक़त पर भरोसा रखना होगा। क्योंकि तुम्हारे इस ख़ूबसूरत बदन की कशिश ही तुम्हें तुम्हारा अभीर लौटा सकती है।"

कमोलिका शमा की बातें सुनकर हैरान थी। उसने मंगलसूत्र, सिन्दूर, पति व्रता, ऐसे शब्दों की ताक़तों के बारे में पढ़ा और सुना था पर बदन की ख़ूबसूरती की ताक़त? ये बात उसकी समझ से परे थी। तब कमोलिका की आँखों के सवाल को पढ़ते हुए शमा ने उसे समझाया-

"कमोलिका तुम्हें अभीर के सामने ये साबित करना होगा कि तुम अनारकली से ज़्यादा सुंदर हो, ज़्यादा अटरेक्टिव हो। तुम्हें अभीर को ये यक़ीन दिलाना होगा कि उसे तुम्हारे संग संभोग करके ज़्यादा आनंद आयेगा न कि अनारकली के संग।"

शमा की बात सुनकर कमोलिका झल्ला उठी।

"पागल तो नहीं हो गयी तुम? मैं यहाँ अपने पति अभीर के संग अपने रिश्ते को बचाने की बात कर रही हूँ, वो रिश्ता जो प्यार के सूत्र में बँधा है! जो पवित्र है, शक्तिमान है और तुम मेरे सामने कैसी गंदी-गंदी बातें कर रही हो। बदन! आकर्षण! संभोग! और न जाने क्या क्या!!"

शमा ने एक लम्बा साँस लेते हुए कहा-

"यही दुविधा है हमारे देश के लोगों की ख़ास कर तुम जैसी औरतों की। प्यार के नाम पर सब कुछ करेंगी पति के साथ हर तरह का शारीरिक आनंद लेंगी पर उसके बारे में बात करते हुए शर्म आती है।" लगभग चिढ़ते हुए शमा ने कहा। उसने आगे जो कहा उस बात ने कमोलिका की आँखे खोल दीं-

"तुम्हारी नज़र में प्यार की क्या परिभाषा है? हाँ? तुम्हारी और अभीर की शादी? घर-गृहस्थी? रिश्तेदारी? या फिर वो पल जो तुम दोनों बंद कमरे में अकेले निर्वस्त्र गुज़ारते हो? एक-दूसरे की शाररिक इच्छाएँ पूरी करके? अभीर जब भी घर से बाहर जाता है, क्यों उसका इंतज़ार करती हो सज-सँवर के? क्यों उसके सामने परफ़्यूम लगाती हो, सेक्सी ड्रेस पहनकर ख़ुद को पेश करती हो? ताकि तुम्हें अभीर वो शारीरिक सुख और आनंद दे, जिसकी चाहत क़ुदरत ने तुम्हारे दिलो-दिमाग़ में पैदा की है।" वो एक ही साँस में सब कुछ कह गयी थी और कमोलिका खुली आँखों से उसे देख रही थी। शमा ने आगे बढ़कर कमोलिका का हाथ थाम लिया और कहा-

"कमोलिका ये समाज हमारे लिए कई रिश्ते बनाता है पर क़ुदरत ने सिर्फ़ एक ही रिश्ता बनाया है, मर्द और औरत का। एडम और ईव को सोने के सेब खिलाकर इस बात का एहसास दिलाया। ईव को आकर्षित बनाया, उसके कोमल बदन की बनावट इस प्रकार बनायी कि एडम उसकी तरफ़ आकर्षित हो। उसे छूने की इच्छा करे, उसमें समाने की चाहत रखे, ताकि सृष्टि का संचालन हो। बताओ अगर सेक्स नहीं होगा तो बच्चे कैसे होंगे और सेक्स के लिए मन में ख़ुशी और उसकी लालसा होनी ज़रूरी है। इसीलिए ये नियम तब से लेकर आज तक चलता आ रहा है। जवान मर्द ख़ूबसूरत औरत की तरफ़ आकर्षित होता है और ख़ूबसूरत औरत जवान मर्द की तरफ़, और इसे ही हम प्यार कहते हैं!"

शमा ने लम्बा साँस लेकर आगे कहा-

"कैसी विडम्बना है प्यार के नाम पर सेक्स करते हैं, पर उसकी बात करते हुए शरमाते हैं!"

कमोलिका आँख में उम्मीद लिये शमा की बातें ध्यान से सुन रही थी। वो समझ चुकी थी कि उसे अगर अपने पति को वापस पाना है तो उसे प्यार की असली परिभाषा को बिना शर्म के अपनाना होगा। उसे अभीर को अपनी सुन्दरता से आकर्षित करके अपने साथ संभोग करने के लिए प्रेरित करना होगा। यही उसके प्यार की जीत होगी, वर्ना अभीर की मौत निश्चित है।

पर क्या कमोलिका अभीर की ज़िन्दगी बचा पायी? जानने के लिए उस कहानी में चलते हैं जो आज से तक़रीबन एक साल पहले शुरू हुई थी इसी वर्धमान हवेली से।

अनुक्रम

1. अध्याय 1
2. अध्याय 2
3. अध्याय 3
4. अध्याय 4
5. अध्याय 5
6. अध्याय 6
7. अध्याय 7
8. अध्याय 8
9. अध्याय 9

अध्याय 1

रामपुर के जंगलों में रात का सन्नाटा पसरा हुआ था। रह-रहकर दूर से कहीं उल्लू के बोलने की आवाज़ आ रही थी। या फिर कुछ क़दमों की जो इस सन्नाटे को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे। तीन लोग जंगल की झाड़ियाँ सरकाते हुए आगे की ओर बढ़ रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उनमें से एक उनका लीडर है। लम्बा-सा क़द, जिसने एक लम्बा-सा कोट पहना हुआ था और सर पर एक टोपी। हाथ में एक टार्च थी जिसकी रौशनी रास्ता दिखा रही थी और पीछे चल रहे दो लोगों के हाथ में बड़ी बंदूकें थीं। अचानक उस लम्बे आदमी ने अपने पीछे आ रहे दोनों आदमियों को रुकने का इशारा किया और उसने अपनी टॉर्च की रौशनी में देखा कि वहाँ एक आदमी की लाश पड़ी थी। उसने टॉर्च की रौशनी में देखा कि वो लाश टाँगों से बीच में से चिरी हुई थी। उस आदमी ने अपने दोनों साथियों को इशारा किया और दोनों ने उस लाश की टाँगों को रस्सी से बाँधा और खींचकर चल पड़े।

अगले ही पल वो जंगल के घने इलाक़े में थे। जहाँ एक छोटी-सी झोपड़ी बनी हुई थी। कुछ विदेशी मूल के लोग वहाँ काम कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई छोटा-सा उद्योग है। जगह-जगह टेबल लगी हुई थीं, जिस पर कोई हरे रंग का पाउडर छोटी-छोटी प्लास्टिक में पैक हो रहा था। रौशनी के लिए वहाँ एक छोटी-सी आग की भट्टी जल रही थी कि तभी वो टोपी वाला लम्बा आदमी अपने साथियों के साथ उस लाश को लेकर वहाँ पहुँचा। उसे देख सब रुक गये। उस टोपी वाले आदमी ने उस लाश के पाँव से रस्सी खोली और उसकी दोनों टाँगे खोलकर, उसके बदन के अंदर हाथ डालकर उसके अंदर के सभी अंग बाहर खींच लिये और भट्टी में डाल दिये। मानो वो उस लाश के बदन को अंदर से ख़ाली कर रहा था। उसके बाद उसने उस लाश के अंदर वहाँ पड़े हरे रंग के पदार्थ वाले पैकेट डालने शुरू कर दिये, जब तक वो भर नहीं गयी। और फिर किसी सर्जन की तरह उस बॉडी को फिर से सिल दिया, और अगले ही पल उसके दोनों साथी उस बॉडी को एक वैन में रखकर रवाना हो गये।

कुछ समय बाद वो वैन बॉर्डर की तरफ़ हाईवे पर दौड़ रही थी। बॉर्डर की चेक पोस्ट पर पुलिस ने वैन को रोक लिया और जब पीछे का दरवाज़ा खोला गया तो वहाँ एक बुर्के वाली औरत उस लाश के साथ बैठी रो रही थी। उसने उस लाश का डेथ सर्टिफ़िकेट पुलिस कर्मी को दिखाया और वो वैन बॉर्डर क्रॉस कर गयी। अफीम की स्मगलिंग करने का ये एक अनोखा तरीक़ा था। रामपुर के जंगलों में मुजरिम बड़ी होशियारी से पुलिस और प्रशासन की नाक के नीचे ये खेल खेल रहे थे।

ये खेल कुछ सालों से इस जंगल में चल रहा था और इस खेल में कई रहस्मय खिलाड़ी शामिल थे। बेशक रामपुर के जंगल मीलों तक फैले हुए थे। कुछ आदिवासी गाँव थे आसपास और इन जंगलों में चमकती थी एक विशाल वर्धमान हवेली। वर्धमान हवेली

तक़रीबन 500 साल पुरानी है। इतिहास की किताबें बताती हैं कि इसे एक मुग़ल वंश के शहज़ादे ने अपनी प्रेमिका के लिए बनवाया था। वक़्त बीता मुग़ल वंश समाप्त हो गया। फिर अंग्रेज़ों का इस हवेली पर क़ब्ज़ा हुआ और अंग्रेज़ों के जाने के बाद, देश के एक बड़े उद्योगपति रामकिशन वर्धमान ने इसे अंग्रेज़ों से ख़रीद लिया और आज रामकिशन वर्धमान के वंशज सुरेश वर्धमान इस हवेली के मालिक हैं। सुरेश वर्धमान वैसे तो अपने परिवार के साथ लन्दन में रहते हैं। बिज़नेस के सिलसिले में उनका भारत आना-जाना लगा रहता है। पर ये वर्धमान हवेली उनके लिए अब बोझ बन गयी है। एक तो लन्दन में बैठकर इसके रखरखाव में काफ़ी मुश्किलें आ रही हैं। दूसरा आये दिन सरकार की तरफ़ से इस हवेली को धरोहर संपत्ति [हेरिटेज़ प्रॉपर्टी] घोषित करने का प्रस्ताव उन्हें परेशान किये हुए है। लिहाज़ा सुरेश वर्धमान कई सालों से इस हवेली को बेचने की सोच रहे हैं। पर इस हवेली में और उसके आसपास आये दिन कुछ न कुछ ऐसा हो जाता है कि उनके लिए इस हवेली को बेचना मुश्किल हो रहा था।

अभी पिछले साल की तो बात है। हवेली में शमा अपने बॉयफ्रेंड के साथ रहने आयी थी। शमा का बॉयफ्रेंड राहुल इस हवेली को बतौर तोहफ़ा उसे देना चाहता था। उस रात ज़ोरों की बरसात हो रही था और हवेली के बड़े से हॉल में शमा और राहुल प्रेम लीला में लीन थे। एक बड़े से कमरे में शमा के हँसने की आवाज़ें आ रहीं थीं। खिड़की के पास ही राहुल ने शमा के काँधे जकड़ रखे थे। वो शमा की ड्रेस उसकी पीठ से नीचे खिसकाकर उन्हें बेतहाशा चूमे जा रहा था और शमा वहाँ बाहर से बरस रही बरसात की धीमी-धीमी बूँदों का आनंद सामने से ले रही थी। राहुल उसे ये आनंद पीछे से दे रहा था। देखते-देखते राहुल ने शमा की ड्रेस खींचकर नीचे उतार दी। अब उसका निर्वस्त्र बदन उसकी आग़ोश में था। शमा ने भी अब ख़ुद को राहुल के सुपुर्द कर दिया था। वो अपना हाथ बढ़ाकर राहुल के सर को पकड़कर अपनी गर्दन पर दबाये हुए थी। राहुल ने भी हाथ बढ़ाकर शमा के वक्षों को अपनी हथेलियों से अपनी और दबाना शुरू कर दिया। शमा समझ चुकी थी कि राहुल उसके पीछे से आनंद लेना चाहता है। लिहाज़ा उसने झुक कर उसे इस बात की इजाज़त दे दी कि अचानक उनके पीछे से एक हरे रंग का धुआँ उभरने लगा। दोनों प्रेमी प्रेम-कीड़ा में लीन इस बादल रूपी हरे रंग के धुएँ से अनजान थे। प्रेम अब धीरे-धीरे शमा के भीतर समाने लगा था। शमा भी आँख बंद किये इस क्रिया का आनंद ले रही थी कि अचानक शमा को ना जाने क्या हुआ उसने अपनी आँखें खोलीं मानो उसका मिज़ाज बदल गया हो पर उसकी आँखों में अब प्यार की जगह क्रोध था। उसकी आँखें हरी थीं और उसने एक ही झटके में राहुल को उसी स्थिति में पीछे दीवार की तरफ़ धकेल दिया और ज़ोर-ज़ोर से उसकी कमर पर अपनी कमर से धक्का देने लगी। पहले तो राहुल को शमा की इस उत्तेजना से आनंद आ रहा था। परन्तु कुछ पल बाद उसे दर्द होने लगा। वो यही कहे जा रहा था-

"शमा मुझे दर्द हो रहा है, रुक जाओ.." पर शमा अपने मुँह से एक अजीब-सी आवाज़ निकालकर उसे धकेले जा रही थी मानो राहुल के संग आक्रामक संभोग कर रही हो। राहुल चिल्लाता रहा पर वो तब तक नहीं रुकी, जब तक राहुल निढाल होकर गिर नहीं गया। उसके गुप्त अंग से एक ख़ून की धारा बह चली थी। वो दर्द में कराहता हुआ यही कहे जा रहा था-

"क्यों कर रही हो शमा तुम... क्यों?" पर उसके बाद जो हुआ, राहुल के लिए वो उसकी ज़िन्दगी का आख़िरी नज़ारा था। उसने देखा कि उसकी टाँगे बीच में से चीरी जा रहीं थीं। दो मज़बूत हाथ उसकी टाँगों को पकड़कर दोनों तरफ़ खींच रहे थे और एक आख़िरी चीख़ के साथ राहुल ने दम तोड़ दिया और फिर वही हरा धुआँ राहुल की लाश पर छा गया।

पिछले कई सालों से हवेली के आसपास ऐसी कई घटनाएँ घट रही थीं। कुछ लाशें पायी जाती रही थीं और कुछ लापता हो जाती थीं, परन्तु आज तक पुलिस के हाथ न तो कोई असली मुजरिम लगा न ही वो इन मौतों का कारण जान पायी थी। बस एक ही तर्क होता है उनका कि हवेली के आसपास के सुनसान इलाक़े का फ़ायदा उठाकर मुजरिम अपने जुर्म को अंजाम देकर भाग जाते हैं। आसपास के कुछ स्थानीय लोग तो इस हवेली को प्रशासन के हवाले करने की माँग कर रहे थे। जिससे वहाँ कम से कम एक पुलिस चौकी तो बन सके। इसीलिए भी सुरेश वर्धमान इस हवेली को जल्द से जल्द बेच देना चाहते थे।

अगर एक तरफ़ वर्धमान साहब हवेली बेचने को तैयार थे तो दूसरी तरफ़ उसे ख़रीदने का सपना भी कई लोग देख रहे थे। कुछ उस हवेली के साथ जुड़ी अफ़वाहों से डर जाते तो कुछ क़ीमत सुनकर पीछे हट जाते। पर एक शख़्स था जो इनमें से किसी भी बात की परवाह किये बिना ये वर्धमान हवेली ख़रीदना चाहता था, 'विक्रम रस्तोगी, उर्फ़ विक्की'। विक्की एक ऐसा बिज़नस मैन है, जिसने एक बिसनेस में अपना सबकुछ लुटा दिया था। बस उसे अब उम्मीद थी कि अगर उसे कोई बचा सकता है तो वो है वर्धमान हवेली। वो वर्धमान हवेली को ख़रीदकर उसे एक होटल में तब्दील करना चाहता था ताकि उसके सारे पुराने पाप धुल सकें। पर उस हवेली को ख़रीदने के लिए उसे किसी बड़े पार्टनर की तलाश थी या यूँ कहें एक बकरे की, जो उसके कहने पर इतनी बड़ी इन्वेस्टमेंट कर सके। और उसके रेडार में आया उसका पुराना दोस्त, 'अभीर ठकराल'! ठकराल इंडस्ट्रीज का इकलौता मालिक।

अभीर ठकराल विक्की के कहने पर आँख बंद करके छोटी मोटी इन्वेस्टमेंट्स कर देता था और नुक़्सान होने पर पूछता भी नहीं था। पर इस बार इन्वेस्टमेंट बड़ी थी इसीलिए खेल भी बढ़ा होना था। लिहाज़ा इस खेल में दाँव पर लगाने के लिए विक्की ने चुना अपनी ख़ूबसूरत बहन को, 'कमोलिका'।

कमोलिका रस्तोगी, विक्रम रस्तोगी की छोटी बहन जो उससे एक साल छोटी थी। कमोलिका हाल ही में ऑस्ट्रेलिया से बिज़नेस मैनेजमेंट का कोर्स करके लौटी थी। गोरा रंग, छरहरा बदन, लम्बे बाल। इतनी आकर्षक कि कोई भी उसे देख ले तो उसकी नज़र न हटे उससे और ये बात उसका भाई विक्की जानता था। लिहाज़ा उसने मन ही मन ठान लिया कि वो कमोलिका की शादी किसी भी तरह अभीर से करवा देगा। पर जब ये बात उसने कमोलिका को बतायी तो वो थोड़ा हिचकिचाई, "दिस इस नॉट पॉसिबल विक्की! तुम अभीर ठकराल की बात कर रहे हो.. इतना बढ़ा उद्योगपति, भला मेरी तरफ़ क्यों देखेगा? और फिर मैं उसे जानती तक नहीं, ना कभी मिली हूँ!" इतना सुनते ही विक्की ने उसके होंठों पर अपनी उँगली रखते हुए कहा-

"इतनी ख़ूबसूरत बहन है मेरी, अगर मेनका ऋषि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने में कामयाब हो सकती है तो, तुम्हारे लिए तो अभीर ठकराल मामूली शय है। आज रात अभीर के जन्मदिन की पार्टी है। ज़ाहिर सी बात है वहाँ बहुत सी ख़ूबसूरत लड़कियाँ होंगी, जो ख़ुद को अभीर ठकराल की ज़िन्दगी से जोड़ना चाहती हैं पर आज रात की बाज़ी तुम्हें मारनी है। इतनी हॉट बनके जाना कि अभीर मुझसे सामने से आ कर तुम्हारा हाथ माँग ले।"

कमोलिका को विक्की की इन बातों में किसी ज़बरदस्त सौदे की बू आ रही थी। उसने विक्की का हाथ झटकते हुए कहा-

"विक्की मैं तुम्हारे साथ पार्टी में ज़रूर चलूँगी पर नुमाइश बनकर नहीं। हाँ मुझे कोई ऐतराज़ नहीं कि मैं अभीर की पत्नी बनूँ! पर उसे अपना जिस्म दिखाकर, रिझाकर नहीं!" इतना सुनते ही विक्की ने कमोलिका की बाज़ू ज़ोर से कस दी। उसकी जकड़न में कमोलिका विक्की के ग़ुस्से को महसूस कर पा रही थी। विक्की ने अपने दाँत भींचते हुए कहा-

"तुम्हें आज की पार्टी में, हर हाल में ये लड़ाई जीतनी है समझी.." कमोलिका की बाज़ू में दर्द होने लगा था, जिससे उसके आँसू निकल आये। विक्की ने ये महसूस करते हुए उसका हाथ छोड़ दिया और सर पकड़कर बेचारा-सा बनकर कहने लगा- "हर तरफ़ से नुक़्सान हो रहा है कमोलिका, कहीं से बचाव का कोई रास्ता नहीं दिख रहा, बस यही सोचकर मैं तुमसे रिक्वेस्ट कर रहा था कि अगर तुम्हारी शादी अभीर से हो गयी तो इस रिश्ते के रहते मैं उसका पार्टनर बन जाऊँगा और फिर किसी तरह अपने बिज़नेस को भी ट्रैक पर ले आऊँगा। मैं तुम्हें कोई सौदा करने को नहीं कह रहा कमोलिका। आज नहीं तो कल तुम्हारी शादी किसी न किसी से तो होनी है, तो फिर अभीर से क्यों नहीं!" कमोलिका ने देखा कि विक्की की बात में तर्क था।

"ठीक है मैं अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करूँगी पर अपनी सीमा नहीं लाँघूँगी!" कहते हुए वो अपने कमरे में चली गयी। कमरे में आते ही उसने अपने मोबाइल में अभीर

का प्रोफ़ाइल देखना शुरू कर दिया। उसका प्रोफ़ाइल देख कर वो दंग रह गयी। कहीं बंजी जम्पिंग तो कहीं राफ़्टिंग, कहीं ट्रैकिंग तो कहीं जंगल में शिकार करते हुए उसकी कई तस्वीरें थीं। काफ़ी एडवेंचरस था अभीर। 6 फ़ीट लम्बा क़द, सुडौल शरीर। सही कहा था विक्की ने, पैसा और ख़ूबसूरती, ये कॉम्बिनेशन बहुत कम देखने को मिलता है। अभीर के इस प्रोफ़ाइल को देखकर कमोलिका ने मन बना लिया था कि वो विक्की को हासिल करने की दौड़ में भाग लेगी। मन ही मन मुस्कुरा दी और उसने अपनी अल्मारी खोलकर ड्रेस छाँटनी शुरू कर दी जो वो आज रात पार्टी में पहनकर जाने वाली थी और उसके हाथ में आया एक लाल रंग का गाउन।

उधर आज अभीर के जन्मदिन के अवसर पर 5 सितारा होटल के बॉलरूम में एक आलीशान पार्टी का आयोजन किया गया था। कई बड़े-बड़े उद्योगपति, राजनेता इस पार्टी में शरीक थे और ख़ास कर ख़ूबसूरत लड़कियाँ जिन्होंने अभीर को घेर रखा था। क्यों न हो शहर का मोस्ट वांटेड बैचलर था अभीर। हर लड़की पार्टी में अंग प्रदर्शन की चलती फिरती दुकान लग रही थी। हर कोई बस अभीर को अपनी ओर आकर्षित करने में लगी थी और अभीर! वो तो जैसे कान्हा बना गोपियों के बीच घिरा अपनी तस्वीरें उतरवा रहा था। और तभी विक्की के साथ कमोलिका का प्रवेश हुआ। उसने एक लाल रंग का गाउन पहन रखा था। जो उसने ख़ास कर अभीर की पार्टी के लिए ही चुना था। एक डिज़ाइनर गाउन था वो। काँधे से सरकता हुआ उसके रूप की व्याख्या कर रहा था। सर पे जूड़ा बनाकर बाल बाँधे हुए थे उसने। कुछ लटें बेपरवाही से उसके कानों के पास लटक रहीं थीं। ग़ज़ब की लग रही थी कमोलिका। पर कमोलिका पार्टी का ये नज़ारा देखकर दंग रह गयी। उसका दिमाग़ चकराने लगा। अरे बापरे इतनी सारी ख़ूबसूरत लड़कियाँ, एक से बढ़कर एक मॉडल जैसी लग रही थीं। कमोलिका समझ गयी कि उसकी यहाँ दाल नहीं गलने वाली और उसने लड़ने से पहले ही हार मान ली और ये बात विक्की भांप गया था जब कमोलिका ने उससे कहा-

"विक्की आई थिंक मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था, देयर इस नो यूज़.." विक्की ने कमोलिका की बाज़ू कसकर पकड़ ली कि कहीं कमोलिका भाग न जाये और उसे पकड़कर उस तरफ़ ले गया जहाँ अभीर लड़कियों के साथ तस्वीरें खिचवा रहा था। विक्की को देखते ही अभीर सबको छोड़कर विक्की के गले से लिपट गया।

"माय ब्रदर विक्की ... क्या बे साले घर का होकर सबसे लेट आया है।" कहते हुए उसने विक्की के काँधे पर हल्के से मुक्का मार दिया। कमोलिका ने देखा कि विक्की काफ़ी क्लोज़ था अभीर के। तभी विक्की ने कमोलिका का परिचय करवाते हुए कहा-

"अभीर ये मेरी बहन कमोलिका.. कुछ दिन पहले ही ऑस्ट्रेलिया से अपनी स्टडीज़ पूरी करके आयी है।"

"हाँ यस-यस, तुमने ज़िक्र किया था कि तुम्हारी एक छोटी बहन है.. पर ये तो ख़ासी बड़ी है.." चुटकी लेते हुए अभीर अपनी ही बात पर हँस दिया। कमोलिका ने देखा कि अभीर का

सेन्स ऑफ़ ह्यूमर भी काफ़ी अच्छा है। कमोलिका ने भी शिष्टाचार का परिचय देते हुए अभीर को विश कर दिया-

"हैप्पी बर्थडे टू यू अभीर.." अभीर ने भी विनम्रता से जवाब देते हुए कहा, "थैंक्स"। अचानक अभीर के मैनेजर ने उसके कान में आकर कुछ कहा। अभीर ने विक्की और कमोलिका से माफ़ी माँगते हुए कहा-

"एक्स्क्युसमी, मैं अभी आया.. प्लीज़ एन्जॉय दा पार्टी" कहता हुआ निकल गया। कमोलिका ने हैरानी से विक्की को देखते हुए कहा-

"उसने तो ठीक से बात भी नहीं की मुझसे और तुम कह रहे थे..." विक्की ने कमोलिका की बात काटते हुए कहा-

"बिज़ी आदमी है, एक बार फ़्री हो जाये फिर तुम्हारी बात करवाऊँगा। तुम तब तक कोई ड्रिंक लो.. सामने ही बार है.. मैं तब तक कुछ मेहमानों से मिल लेता हूँ।" कहते हुए विक्की भी कमोलिका को अकेला छोड़कर चला गया।

कमोलिका के चहरे पर एक निराशा थी पर उसके पास कोई और विकल्प नहीं था। वो इस पार्टी में किसी और को जानती भी तो नहीं थी। लिहाज़ा उसने बार के पास जाकर एक ड्रिंक लेना ही उचित समझा और इधर विक्की जो वेटर से ड्रिंक का गिलास लेकर अभीर को ही देखे जा रहा था जो लोकल एम.एल.ए. त्रिपाठी जी के साथ खड़ा बतिया रहा था, जो शायद अपनी बेटी के साथ उसकी बातचीत करवा रहे थे। विक्की ने देखा ऐसे कई नेता और उद्योगपति क़तार में लगे थे जो ऐसे ही मौक़े के इंतज़ार में थे। विक्की ने मन में ठान लिया था कि वो आज अपनी बहन कमोलिका और अभीर को एक करके ही जायेगा, चाहे उसके लिए उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े। और फिर उसे वो शख़्स दिखा जिसका उसे बेसब्री से इंतज़ार था। सुरेश वर्धमान, वर्धमान इंडस्ट्रीज का मालिक और वर्धमान हवेली का भी। उम्र लगभग 55 के आसपास की रही होगी। गोरा रंग और चेहरे पर हल्की रोबीली सफ़ेद दाढ़ी। सूटेड-बूटेड, पहनावे से लग रहा था कि काफ़ी अमीर है वो। विक्की ने मौक़ा पाते ही वर्धमान के क़रीब जाकर, अपना हाथ बढ़ाकर अपना परिचय दे डाला और ये भी कि वो उनकी वर्धमान हवेली ख़रीदने में इच्छुक है। वर्धमान ने मुस्कुराते हुए कहा-

"बहुत ऊँचे दाम हैं उस हवेली के, तुम्हें देखकर लगता नहीं है कि उसे ख़रीदने की तुम्हारी हैसियत है। मैं तो ये पेशकश अभीर ठकराल के लिए लेकर आया हूँ।" "फिर आप सही जगह पर आये हैं। मैं अभीर ठकराल का पार्टनर हूँ" ये छोटा-सा झूठ विक्की ने वर्धमान को बोल दिया था क्योंकि उसे यक़ीन था कि जो खेल वो खेलने जा रहा था उसमें उसकी जीत निश्चित है, या यूँ कहें कि हारने की गुंजाइश नहीं। वर्धमान ने आँख सिकोड़ते हुए विक्की से पूछ लिया, "अगर अभीर साहब ये बात मुझसे कह दें तो मैं ये सौदा अभी डन कर दूँगा, आप एडवांस मेरे मैनेजर को पहुँचा देना।" "सौदा डन ही समझिये। बात ये है वर्धमान साहब, मेरी बहन की शादी अभीर ठकराल के साथ होने वाली है, बस आपके रहते

ही अनाउंसमेंट हो जायेगी, बस समझ लीजिये मैं ये हवेली अपनी बहन और होने वाले बहनोई को एक गिफ़्ट के तौर पर देना चाहता हूँ।"

उसने कमोलिका की तरफ़ इशारा करते हुए कहा जो दूर बार काउंटर पर अकेली बैठकर शराब पी रही थी।

विक्की ये झूठ इतने आत्मविश्वास से कह गया था कि उसका झूठ भी सच लग रहा था। वर्धमान के चहरे पर अभी भी प्रश्न चिन्ह उभर रहे थे, क्योंकि उसने देखा कि अभीर तो कई लड़कियों के संग घिरा हुआ है और उसका ध्यान तो कमोलिका की तरफ़ है ही नहीं! उसका दिल तो कह रहा था कि विक्की सच बोल रहा है पर दिमाग़ नहीं मान रहा था।

"ठीक है अगर अभीर ठकराल ने आज अपनी शादी की अनाउंसमेंट आपकी बहन के साथ कर दी तो वर्धमान हवेली आपकी।" कहते हुए वो बाक़ी के मेहमानों से मिलने चला गया। विक्की ने अपनी चाल अपने दिमाग़ में तो चल दी थी बस अब बारी थी उसे अमल में लाने की।

पार्टी अब धीरे-धीरे अपने शबाब पर आ रही थी। संगीत की ध्वनि तेज़ हो रही थी और उस धुन पर मस्त होते पार्टी के लोग। विक्की ने अपने गिलास से सिप लेते हुए देखा दूर बार काउंटर पर कमोलिका अकेली बैठकर धीरे-धीरे अपनी ड्रिंक के सिप लिये जा रही है। संगीत की ताल पर अपने काँधे धीरे-धीरे हिलाते हुए, वो यही सोचे जा रही थी कि शायद उसने इस पार्टी में आकर ग़लती कर दी। इतना ख़ूबसूरत गाउन उसने अभीर के लिए ही तो पहना था। जिसमें अभीर उसकी ख़ूबसूरती का दीदार खुलकर कर सके पर अभीर ने तो उसे नज़र भर के भी नहीं देखा। इसी ग़म में वो एक के बाद एक टकीला शॉट्स लिये जा रही थी। उसे अब चढ़ने लगी थी। उसके पाँव से निकलकर उसके जूते गिर गये थे। विक्की दूर खड़ा ये देख रहा था। वो जानता था कि कमोलिका अपनी सुध खो चुकी है। लिहाज़ा वो धीरे से उसके पास गया।

"होप यू आर कम्फ़र्टेबल बहना?" कमोलिका ने नशीली हंसी बिखेरते हुए कहा-

"विक्की तुम बेकार में मुझे इस पार्टी में ले आये। देखो कितनी सेक्सी ड्रेस पहनकर आयी थी मैं और तुम्हारे दोस्त ने तो मुझे एक बार भी नहीं देखा।" विक्की ने मुस्कुराते हुए कमोलिका का गिलास फिर से भरते हुए कहा-

"ये बात तुम ख़ुद क्यों नहीं उससे कहती?" कमोलिका- "कह दूँगी, मैं डरती थोड़े न हूँ ...आने दो सामने।" कहते हुए उसने अगला गिलास गटक लिया। अभीर बस मुस्कुराकर उसकी बातें सुने जा रहा था। कमोलिका अब धीरे-धीरे अपने होश खो रही थी। उसे चक्कर आने लगे थे, पर वो ख़ुद को सँभाले हुए थी। विक्की ने देखा अभीर के आसपास अब मेहमानों की भीड़ कम हो गयी है। मौक़ा अच्छा था। लिहाज़ा वो कमोलिका को वहीं छोड़कर निकल गया।

विक्की ने अभीर के पास जा कर अपना अगला दाँव खेल डाला। जब अभीर ने विक्की से कमोलिका के बारे में पूछा-
"विक्की तुम्हारी बहन कमोलिका कहाँ है?"
विक्की- "भाई वो मुझसे और तुझसे दोनों से नाराज़ है.."
अभीर- "क्यों?"
विक्की- "कहती है कि जिसकी पार्टी में आयी है, उसे तो बात करने की भी फ़ुर्सत नहीं है।"
अभीर- "आई एम रियली सॉरी, कहाँ है वो?"
विक्की- " वो देखो बेचारी अकेली बार पर बैठ कर पिये जा रही है।"
अभीर- "ओके तुम ज़रा मेहमानों का ख़याल रखो, मैं उससे मिलकर आता हूँ।" कहते हुए अभीर के क़दम बार की ओर बढ़ चले। विक्की की ये अगली चाल थी।

बार के पास पहुँचकर अभीर कमोलिका की ख़ूबसूरती देखकर दंग रह गया। उसने कमोलिका को अब धयान से देखा था। गोरी पीठ पर लटकती उसकी सुनहरी लटें। अभीर तो एक पल के लिए सबकुछ भूल गया। वो कमोलिका को आवाज़ देने को ही था कि कमोलिका को उल्टी आ गयी और उसने सब कुछ अभीर की ड्रेस पर उड़ेल दिया। वो गिरने को थी कि अभीर ने उसे अपनी बाँहों में थाम लिया।

कमोलिका इतनी ज़ोर से गिरी कि उसके हाथ में अभीर की शर्ट आ गयी और वो फट गयी। अब कमोलिका पूरी की पूरी अभीर की बाँहों में थी। अभीर को एक पल के लिए समझ नहीं आया कि इस स्थिति में वो क्या करे। तभी बार टेंडर ने मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा-
"सर मैं किसी को बुलाता हूँ"
अभीर- "नहीं तुम अपना काम करो, मैं मैनेज कर लूँगा और ये बात किसी से मत कहना, मैं इन्हें कमरे में सुलाकर आता हूँ।" कहते हुए उसने कमोलिका को बाँहों में उठा लिया और बार के पीछे से सबकी नज़रें बचाकर निकल गया। पर नहीं बच पाया तो विक्की की नज़रों से, जिसके प्लान का अगला क़दम था।

अभीर कमोलिका को उठाकर होटल के कॉरिडोर में चल रहा था। पार्टी के संगीत का शोर धीरे-धीरे धूमिल होता जा रहा था। अभीर के हाथों में कमोलिका का नर्म मुलायम बदन था। एक अजीब-सी गर्माहट वो महसूस कर रहा था जो धीरे-धीरे उसे उत्तेजित कर रही थी। एक रूम के आगे जाकर उसने बेहोश कमोलिका को दीवार का सहारा देकर अपनी जेब से कमरे की इलैक्ट्रोनिक चाभी निकालकर दरवाज़ा खोला और फिर से उसे सहारा देकर अंदर ले आया। एक आलीशान सुईट था अभीर का। उसने कमोलिका को प्यार से बिस्तर पर लिटा दिया। उसने पाया कि कमोलिका की ड्रेस उसका साथ छोड़ चुकी थी। कमोलिका का दमकता रूप अभीर को अपना परिचय दे रहा था। अभीर अपना आपा खोने लगा था। उसका दिल कर रहा था कि एक बार वो कमोलिका को छू ले। पर ये ग़लत